अध्याय 9: मैया मैं नहिं माखन खायो

विषय-सूची — 7 प्रश्नावली · 11 प्रश्न

प्रश्नावली 9.1	मेरी समझ से	2 प्रश्न
प्रश्नावली 9.2	सोच-विचार के लिए	2 प्रश्न
प्रश्नावली 9.3	शब्दों के रूप — ब्रजभाषा से हिंदी	1 प्रश्न
प्रश्नावली 9.4	शब्दों के रूप — स्तंभ मिलान	1 प्रश्न
प्रश्नावली 9.5	पंक्ति से पंक्ति — भावार्थ मिलान	1 प्रश्न
प्रश्नावली 9.6	वर्ण-परिवर्तन	1 प्रश्न
प्रश्नावली 9.7	समय का माप	3 प्रश्न

प्रश्नावली 9.1 — मेरी समझ से

प्रश्न 1

नीचे दिए गए प्रश्न का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए— मैं माखन कैसे खा सकता हूँ? इसके लिए श्रीकृष्ण ने क्या तर्क दिया? (क) मुझे तुम पराया समझती हो। (ख) मेरी माता, तुम बहुत भोली हो। (ग) मुझे यह लाठी-कंबल नहीं चाहिए। (घ) मेरे छोटे-छोटे हाथ छीके तक कैसे जा सकते हैं?

हल

पद में श्रीकृष्ण कहते हैं: 'मैं बालक बहियन को छोटो, छीको केहि बिधि पायो।'
इसका अर्थ है — मैं छोटा बालक हूँ, मेरी बाँहें बहुत छोटी हैं; ऊँचाई पर लटके हुए छीके (दूध-दही रखने का जाल) तक मेरे छोटे हाथ कैसे पहुँच सकते हैं?
यही उनका मुख्य तर्क है — उनके हाथ इतने छोटे हैं कि वे छीके तक पहुँच ही नहीं सकते थे।
अन्य विकल्प पद में हैं, किंतु वे माखन न खाने का तर्क नहीं, बल्कि माँ को उलाहना देने की बातें हैं।

उत्तर: (घ) मेरे छोटे-छोटे हाथ छीके तक कैसे जा सकते हैं?

प्रश्न 2

नीचे दिए गए प्रश्न का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (★) बनाइए— श्रीकृष्ण माँ के आने से पहले क्या कर रहे थे? (क) गाय चरा रहे थे। (ख) माखन खा रहे थे। (ग) मधुबन में भटक रहे थे। (घ) मित्रों के संग खेल रहे थे।

हल

पद की पहली पंक्ति में श्रीकृष्ण कहते हैं: 'भोर भयो गैयन के पाछे, मधुबन मोहि पठायो।'
अर्थात — सुबह होते ही माँ ने उन्हें गायों के पीछे मधुबन भेज दिया।
दूसरी पंक्ति में वे कहते हैं: 'चार पहर बंसीवट भटक्यो, साँझ परे घर आयो।'
अर्थात — वे चार पहर (लगभग 12 घंटे) बंसीवट में गायें चराते हुए भटकते रहे और शाम को घर लौटे।
माँ के आने से पहले वे गाय चरा रहे थे — यह पद में उनका स्वयं का कथन है।

उत्तर: (क) गाय चरा रहे थे।

प्रश्नावली 9.2 — सोच-विचार के लिए

प्रश्न 1

पद में श्रीकृष्ण ने अपने बारे में क्या-क्या बताया है?

हल

पद में श्रीकृष्ण ने अपने बारे में निम्न बातें बताई हैं:

1. वे सुबह होते ही गायों के साथ मधुबन जाते हैं — 'भोर भयो गैयन के पाछे, मधुबन मोहि पठायो।'
2. वे चार पहर (करीब 12 घंटे) बंसीवट में भटकते रहे और शाम को घर लौटे — 'चार पहर बंसीवट भटक्यो, साँझ परे घर आयो।'
3. वे छोटे बालक हैं और उनकी बाँहें इतनी छोटी हैं कि वे छीके तक नहीं पहुँच सकते — 'मैं बालक बहियन को छोटो, छीको केहि बिधि पायो।'
4. सखा (ग्वाल-बाल) उनसे बैर रखते हैं और उन्होंने जबरदस्ती उनके मुँह पर माखन लपटा (पोत) दिया — 'ग्वाल-बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो।'
5. उन्हें माँ की यह लकुटि और कमरिया (कंबल) नहीं चाहिए; इन्होंने उन्हें बहुत नचाया है — 'ये ले अपनी लकुटि कमरिया, बहुतहिं नाच नचायो।'

उत्तर: श्रीकृष्ण ने बताया कि वे सुबह गाय चराने गए थे, चार पहर बंसीवट में भटके, उनकी बाँहें छोटी हैं इसलिए छीके तक नहीं पहुँच सकते, ग्वाल-बालों ने ही उनके मुँह पर माखन पोत दिया, और उन्हें यह लकुटि-कमरिया वापस करनी है।

प्रश्न 2

यशोदा माता ने श्रीकृष्ण को हँसते हुए गले से क्यों लगा लिया?

हल

पद की अंतिम पंक्ति है: 'सूरदास तब बिहँसि जसोदा, लै उर कंठ लगायो।'

यशोदा माता को समझ आ गया कि श्रीकृष्ण माखन खाकर उन्हें तरह-तरह के तर्क देकर मनाने की कोशिश कर रहे हैं।

कृष्ण के भोले और चतुर तर्क सुनकर माता को हँसी आ गई — वे जान गईं कि यह सब कृष्ण की बाल-लीला है।

श्रीकृष्ण ने यहाँ तक कह दिया कि 'तेरे मन में कोई भेद है, तूने मुझे पराया समझ लिया' और लकुटि-कमरिया वापस करने लगे।

माँ का मातृ-वात्सल्य जाग उठा — बच्चे की चतुराई और उसकी बात पर हँसते हुए उन्होंने उसे हृदय से लगा लिया।

यह दृश्य बाल-स्नेह का अत्यंत मनोहारी चित्रण है — माँ को क्रोध नहीं, प्रेम और हास्य अनुभव हुआ।

उत्तर: यशोदा माँ को समझ आ गया कि कृष्ण माखन खाकर भोले-भाले तर्क दे रहे हैं। कृष्ण की बाल-चतुराई और प्रेमपूर्ण उलाहना सुनकर माता को हँसी आई और वात्सल्य भाव से उन्होंने कृष्ण को गले लगा लिया।

प्रश्नावली 9.3 — शब्दों के रूप — ब्रजभाषा से हिंदी

प्रश्न 1

पद में 'पाछे' शब्द आया है जिसके लिए आधुनिक हिंदी में 'पीछे' शब्द का प्रयोग होता है। नीचे दिए गए ब्रजभाषा के शब्दों को उस रूप में लिखिए जिस प्रकार आप बोलते-लिखते हैं— (i) परे (ii) कछु (iii) छोटो (iv) लै (v) बिधि (vi) नहिं (vii) भोरी

हल

(i) परे → पड़े / पर (संदर्भ अनुसार — 'साँझ परे' = साँझ ढलने पर / शाम होने पर)
(ii) कछु → कुछ
(iii) छोटो → छोटा
(iv) लै → ले / लेकर
(v) बिधि → विधि (तरीका, प्रकार)
(vi) नहिं → नहीं
(vii) भोरी → भोली

उत्तर: परे → पड़े/पर; कछु → कुछ; छोटो → छोटा; लै → ले/लेकर; बिधि → विधि; नहिं → नहीं; भोरी → भोली

प्रश्नावली 9.4 — शब्दों के रूप — स्तंभ मिलान

प्रश्न 1

पद में से कुछ शब्द चुनकर नीचे स्तंभ 1 में दिए गए हैं और स्तंभ 2 में उनके अर्थ दिए गए हैं। शब्दों का उनके सही अर्थों से मिलान कीजिए— स्तंभ 1: 1. उपजि 2. जानि 3. जायो 4. जिय 5. पठायो 6. पतियायो 7. बहियन 8. बिधि 9. बिहँसि 10. भटक्यो 11. लपटायो स्तंभ 2: 1. मुसकाई, हँसी 2. उपजना, उत्पन्न होना 3. जानकर, समझकर 4. विश्वास किया, सच माना 5. बाँह, हाथ, भुजा 6. प्रकार, भाँति, रीति 7. मन, जी 8. जन्मा 9. मला, लगाया, पोता 10. इधर-उधर घूमा या भटका 11. भेज दिया

हल

1. उपजि → 2. उपजना, उत्पन्न होना
2. जानि → 3. जानकर, समझकर
3. जायो → 8. जन्मा
4. जिय → 7. मन, जी
5. पठायो → 11. भेज दिया
6. पतियायो → 4. विश्वास किया, सच माना
7. बहियन → 5. बाँह, हाथ, भुजा
8. बिधि → 6. प्रकार, भाँति, रीति
9. बिहँसि → 1. मुसकाई, हँसी
10. भटक्यो → 10. इधर-उधर घूमा या भटका
11. लपटायो → 9. मला, लगाया, पोता

उत्तर: उपजि-उत्पन्न होना; जानि-जानकर; जायो-जन्मा; जिय-मन/जी; पठायो-भेज दिया; पतियायो-विश्वास किया; बहियन-बाँह/भुजा; बिधि-प्रकार/रीति; बिहँसि-हँसी; भटक्यो-भटका; लपटायो-मला/पोता

प्रश्नावली 9.5 — पंक्ति से पंक्ति — भावार्थ मिलान

प्रश्न 1

नीचे स्तंभ 1 में कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं और स्तंभ 2 में उनके भावार्थ दिए गए हैं। रेखा खींचकर सही मिलान कीजिए— स्तंभ 1: 1. भोर भयो गैयन के पाछे, मधुबन मोहि पठायो। 2. चार पहर बंसीवट भटक्यो, साँझ परे घर आयो। 3. मैं बालक बहियन को छोटो, छीको केहि बिधि पायो। 4. ग्वाल-बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो। 5. तू माता मन की अति भोरी, इनके कहे पतियायो। 6. जिय तेरे कछु भेद उपजि है, जानि परायो जायो। स्तंभ 2: 1. मैं छोटा बालक हूँ, मेरी बाँहें छोटी हैं, मैं छीके तक कैसे पहुँच सकता हूँ? 2. तेरे हृदय में अवश्य कोई भेद है, जो मुझे पराया समझ लिया। 3. माँ तुम मन की बड़ी भोली हो, इनकी बातों में आ गई हो। 4. सुबह होते ही गायों के पीछे मुझे मधुबन भेज दिया। 5. चार पहर बंसीवट में भटकने के बाद साँझ होने पर घर आया। 6. ये सब सखा मुझसे बैर रखते हैं, इन्होंने मक्खन हठपूर्वक मेरे मुख पर लिपटा दिया।

हल

1. 'भोर भयो गैयन के पाछे, मधुबन मोहि पठायो।' → 4. सुबह होते ही गायों के पीछे मुझे मधुबन भेज दिया।
2. 'चार पहर बंसीवट भटक्यो, साँझ परे घर आयो।' → 5. चार पहर बंसीवट में भटकने के बाद साँझ होने पर घर आया।
3. 'मैं बालक बहियन को छोटो, छीको केहि बिधि पायो।' → 1. मैं छोटा बालक हूँ, मेरी बाँहें छोटी हैं, मैं छीके तक कैसे पहुँच सकता हूँ?
4. 'ग्वाल-बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो।' → 6. ये सब सखा मुझसे बैर रखते हैं, इन्होंने मक्खन हठपूर्वक मेरे मुख पर लिपटा दिया।
5. 'तू माता मन की अति भोरी, इनके कहे पतियायो।' → 3. माँ तुम मन की बड़ी भोली हो, इनकी बातों में आ गई हो।
6. 'जिय तेरे कछु भेद उपजि है, जानि परायो जायो।' → 2. तेरे हृदय में अवश्य कोई भेद है, जो मुझे पराया समझ लिया।

उत्तर: 1-4, 2-5, 3-1, 4-6, 5-3, 6-2

प्रश्नावली 9.6 — वर्ण-परिवर्तन

प्रश्न 1

'भोरी' का अर्थ है 'भोली'। यहाँ 'ल' और 'र' वर्ण परस्पर बदल गए हैं। इस पद में ऐसे कुछ और शब्द हैं जिनमें 'ल' या 'ड़' और 'र' में वर्ण-परिवर्तन हुआ है। ऐसे शब्द चुनकर लिखिए।

हल

पद में जहाँ ब्रजभाषा के शब्दों में 'र' का प्रयोग हुआ है, वहाँ आधुनिक हिंदी में 'ल' या 'ड़' होता है—

1. 'भोरी' (ब्रज) ↔ 'भोली' (हिंदी) — 'र' और 'ल' का परिवर्तन
2. 'पाछे' (ब्रज) ↔ 'पीछे' (हिंदी) — 'छ' में कोई वर्ण-परिवर्तन नहीं, किंतु 'पाछे' का 'छ' ← 'च्छ' ध्वनि-परिवर्तन है
3. 'परे' (ब्रज) ↔ 'पड़े' (हिंदी) — 'र' और 'ड़' का परिवर्तन
4. 'बरबस' (ब्रज) — 'बलपूर्वक/बलात्' (हिंदी) — 'र' और 'ल' का आंशिक परिवर्तन

नोट: 'भोरी'↔'भोली' और 'परे'↔'पड़े' पद में दिए गए सबसे स्पष्ट वर्ण-परिवर्तन के उदाहरण हैं।

उत्तर: पद में वर्ण-परिवर्तन के उदाहरण: 'भोरी' (र) ↔ 'भोली' (ल); 'परे' (र) ↔ 'पड़े' (ड़)

प्रश्नावली 9.7 — समय का माप

प्रश्न 1

श्रीकृष्ण के अनुसार वे कितने घंटे गाय चराते थे?

हल

पद में श्रीकृष्ण कहते हैं: 'चार पहर बंसीवट भटक्यो।'
एक पहर = 3 घंटे (एक दिवस में आठ पहर होते हैं, अर्थात 24 घंटे ÷ 8 = 3 घंटे प्रति पहर)।
चार पहर = 4 × 3 = 12 घंटे।
अतः श्रीकृष्ण के अनुसार वे 12 घंटे (चार पहर) गाय चराते थे।

उत्तर: चार पहर = 4 × 3 = 12 घंटे

प्रश्न 2

मान लीजिए वे शाम को छह बजे गाय चराकर लौटे। वे सुबह कितने बजे गाय चराने के लिए घर से निकले होंगे?

हल

श्रीकृष्ण चार पहर = 12 घंटे गाय चराते थे।
यदि वे शाम 6 बजे लौटे, तो वे 12 घंटे पहले निकले होंगे।
6 बजे शाम − 12 घंटे = 6 बजे सुबह।
अतः वे सुबह 6 बजे घर से निकले होंगे।

उत्तर: सुबह 6 बजे (शाम 6 बजे − 12 घंटे = सुबह 6 बजे)

प्रश्न 3

'दोपहर' का अर्थ है 'दो पहर' का समय। जब दूसरे पहर की समाप्ति होती है और तीसरे पहर का प्रारंभ होता है — यह लगभग 12 बजे का समय होता है, जब सूर्य सिर पर आ जाता है। बताइए दिन के पहले पहर का प्रारंभ लगभग कितने बजे होगा?

हल

दोपहर = दो पहर का अंत = लगभग 12 बजे (जब सूर्य सिर पर होता है)।
दूसरे पहर की समाप्ति 12 बजे होती है, अर्थात दूसरा पहर 9 बजे से 12 बजे तक होता है।
पहला पहर दूसरे पहर से पहले होगा — अर्थात 6 बजे से 9 बजे तक।
अतः दिन के पहले पहर का प्रारंभ लगभग सुबह 6 बजे होगा।
सत्यापन: पहर 1 = 6-9 बजे, पहर 2 = 9-12 बजे (दोपहर), पहर 3 = 12-3 बजे, पहर 4 = 3-6 बजे (साँझ), कुल 4 पहर दिन में।

उत्तर: दिन के पहले पहर का प्रारंभ लगभग सुबह 6 बजे होगा।